• दिव्यता...

सूर्य देव के सात घोड़े

हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में भगवान सूर्य का विशेष स्थान है. उन्हें संसार को प्रकाश देने वाला, जीवन का आधार और ऊर्जा का स्रोत माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सूर्य देव प्रतिदिन अपने दिव्य रथ पर सवार होकर पूरे संसार को प्रकाश प्रदान करते हैं। उनके रथ को सात घोड़े खींचते हैं और इस रथ के सारथी अरुण देव हैं। पौराणिक मान्यताओं में सूर्य देव के सात घोड़ों को केवल रथ खींचने वाले पशु नहीं, बल्कि विशेष शक्तियों और प्राकृतिक व्यवस्थाओं का प्रतीक माना गया है। सात घोड़ों की संख्या को सप्ताह के सात दिनों, प्रकाश के सात रंगों और जीवन की ऊर्जा से जोड़कर भी समझाया जाता है।

▶ सूर्य देव के सात घोड़े किस चीज का प्रतीक हैं?

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सूर्य देव के रथ के सात घोड़े सात प्रकार की शक्तियों और जीवन के अलग-अलग पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्हें समय, गति, प्रकाश और ऊर्जा से जोड़कर देखा जाता है। सूर्य के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना संभव नहीं है। पेड़-पौधों से लेकर मनुष्य और जीव-जंतुओं तक सभी को सूर्य से ऊर्जा मिलती है. वैदिकपरंपरा में सूर्य के सात घोड़ों को सात छंदों से जोड़कर भी समझाया जाता है। छंद का अर्थ वेदों में मंत्रों की लय और उनकी रचना की विशेष पद्धति से है। गायत्री, त्रिष्टुप, जगती, अनुष्टुप, पंक्ति, बृहती और उष्णिक जैसे सात वैदिक छंदों का उल्लेख मिलता है। इस आधार पर सूर्य के सात घोड़ों को वैदिक ज्ञान और मंत्रों की लय का प्रतीक भी माना जाता है।

▶ सात रंगों से क्या है सूर्य के सात घोड़ों का संबंध?

सूर्य देव के सात घोड़ों को इंद्रधनुष के सात रंगों से जोड़कर भी देखा जाता है. विज्ञान के अनुसार, सूर्य का प्रकाश देखने में सफेद दिखाई देता है, लेकिन जब यह प्रकाश किसी प्रिज्म से गुजरता है, तो सात रंगों में विभाजित हो जाता है। इन्हें बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल रंग के रूप में पहचाना जाता है।

▶ सप्ताह के सात दिनों से क्या है सात घोड़ों का संबंध?

हिंदू धर्म और भारतीय ज्योतिष में सप्ताह के सात दिनों का संबंध सात प्रमुख ग्रहों से बताया गया है। रविवार का दिन सूर्य देव को समर्पित है. सोमवार को चंद्रमा, मंगलवार को मंगल, बुधवार को बुध, गुरुवार को बृहस्पति, शुक्रवार को शुक्र और शनिवार को शनि देव से संबंधित माना जाता है। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार, इन सातों ग्रहों का मानव जीवन और प्रकृति पर अलग-अलग प्रभाव होता है. रविवार को सूर्य देव की पूजा करने और उन्हें जल अर्पित करने की परंपरा है।

• पूजा-अर्चना...

शनिदेव

शनिवार का दिन भगवान शनिदेव को समर्पित माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, शनिदेव व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार फल देते हैं। यही वजह है कि शनिवार के दिन उनकी पूजा-अर्चना करने का विशेष महत्व होता है। इस दिन विधि-विधान से शनिदेव की आराधना करने और जरूरतमंदों की मदद करने से उनकी कृपा प्राप्त होती है। मान्यता है कि इससे जीवन की परेशानियां कम होती हैं और सुख-समृद्धि आती है।



ज्योतिष शास्त्र में शनिवार के दिन कुछ खास उपाय करने की सलाह दी जाती है. मान्यता है कि इन उपायों को करने से आर्थिक तंगी दूर होती है, धन प्राप्ति के रास्ते खुलते हैं और घर में बरकत बनी रहती है। अगर आप भी पैसों की परेशानी, नौकरी या कारोबार में आ रही बाधाओं से परेशान हैं, तो शनिवार के दिन कुछ आसान उपाय कर सकते हैं। आइए जानते हैं शनिवार को धन प्राप्ति के लिए कौन-से उपाय करना शुभ माना जाता है.

▸▸ पीपल के नीचे सरसों के तेल का दीपक : शनिवार की शाम को पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाएं। इसके बाद पेड़ की 3 बार परिक्रमा करें और शनिदेव के मंत्र या 'ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः' मंत्र का जाप करें। धार्मिक मान्यता है कि ऐसा करने से आर्थिक परेशानियां दूर होती हैं और घर में सुख-समृद्धि आती है।

▸▸ काले तिल और जल का उपाय : शनिवार के दिन एक लोटे में जल लेकर उसमें थोड़े से काले तिल मिलाएं। इसके बाद इस जल को पीपल के पेड़ की जड़ में अर्पित करें। पूजा के बाद किसी जरूरतमंद व्यक्ति को अन्न या धन का दान करें। मान्यता है कि इससे शनिदेव प्रसन्न होते हैं और आर्थिक संकट से राहत मिलती है।

▸▸ लौंग और कपूर का उपाय : शनिवार की सुबह या शाम पूजा स्थल पर कपूर के साथ दो लौंग जलाएं और उसका धुआं पूरे घर में दिखाएं। इसके अलावा माता लक्ष्मी को दो लौंग अर्पित करें। पूजा के बाद इन लौंग को लाल कपड़े में रखकर अपनी तिजोरी या धन रखने के स्थान पर रख दें। धार्मिक मान्यता है कि इससे घर में सकारात्मकता और बरकत बनी रहती है।

▸▸ शनि मंदिर में छाया दान : शनिवार की शाम को शनि मंदिर जाएं और एक कटोरी में सरसों का तेल लेकर उसमें अपना चेहरा देखें। इसके बाद उस तेल को शनिदेव के चरणों में अर्पित कर दें। इस उपाय को छाया दान कहा जाता है। मान्यता है कि इससे शनि दोष का प्रभाव कम होता है और जीवन की बाधाएं दूर होती हैं।

▸▸ आटे और गुड़ की रोटी : शनिवार के दिन सवा पांच किलो आटे और सवा किलो गुड़ को मिलाकर रोटियां बनाएं। इसके बाद सूर्यास्त के समय इन रोटियों को गाय को खिलाएं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, ऐसा करने से आर्थिक परेशानियां दूर होती हैं और घर में सुख-समृद्धि आती है।



घर में कौन सा दीपक जलाना है सबसे शुभ?

एक मुखी दीपक घर में रोजाना पूजा-पाठ के लिए सबसे सामान्य और प्रचलित दीपक माना जाता है। इसमें एक ही बाती जलती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सुबह और शाम भगवान की पूजा करते समय एक मुखी दीपक जलाना शुभ होता है।

मान्यता है कि नियमित रूप से पूजा घर में एक मुखी दीपक जलाने से मन शांत रहता है और पूजा-पाठ में एकाग्रता बढ़ती है...

हिंदू धर्म में किसी भी शुभ कार्य या पूजा-पाठ की शुरुआत दीपक जलाकर करने की परंपरा है. घर के मंदिर में सुबह और शाम दीपक जलाना शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, दीपक की लौ ज्ञान, पवित्रता और सकारात्मकता का प्रतीक है. जिस तरह एक छोटा सा दीपक अंधकार को दूर कर देता है, उसी तरह जीवन में ज्ञान का प्रकाश अज्ञान और नकारात्मक विचारों को दूर करने का संदेश देता है। पूजा में अलग-अलग मुख वाले दीपक जलाने की परंपरा भी प्रचलित है। मान्यता है कि अपनी मनोकामना और आराध्य देव के अनुसार दीपक जलाकर व्यक्ति ईश्वर से सुख, शांति, समृद्धि की प्रार्थना करता है।

● एक मुखी दीपक क्यों जलाना चाहिए?

एक मुखी दीपक घर में रोजाना पूजा-पाठ के लिए सबसे सामान्य और प्रचलित दीपक माना जाता है। इसमें एक ही बाती जलती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सुबह और शाम भगवान की पूजा करते समय एक मुखी दीपक जलाना शुभ होता है। मान्यता है कि नियमित रूप से पूजा घर में एक मुखी दीपक जलाने से मन शांत रहता है और पूजा-पाठ में एकाग्रता बढ़ती है। इसे ईश्वर के प्रति श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक भी माना जाता है। जो लोग रोजाना घर में पूजा करते हैं, वे सामान्य रूप से इस दीपक का इस्तेमाल कर सकते हैं।

● दो मुखी दीपक का क्या महत्व है?

दो मुखी दीपक में दो बातियां जलाने की व्यवस्था होती है। धार्मिक मान्यताओं में इसे दांपत्य जीवन में प्रेम, आपसी तालमेल और पारिवारिक सुख-शांति की कामना से जोड़कर देखा जाता है। कई परंपराओं में दो मुखी दीपक को परिवार के सदस्यों के बीच आपसी समझ और रिश्तों में मधुरता बनाए रखने का प्रतीक माना जाता है।

● तीन मुखी दीपक क्यों जलाया जाता है?

तीन मुखी दीपक में तीन अलग-अलग बातियां जलती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इसे त्रिदेव यानी ब्रह्मा, विष्णु और महेश से जोड़कर देखा जाता है। मान्यता है कि तीन मुखी दीपक जलाने से जीवन में सकारात्मकता आती है और व्यक्ति को ज्ञान, विवेक तथा आत्मविश्वास की प्राप्ति की कामना करनी चाहिए।

● चार मुखी दीपक जलाने का क्या है महत्व?

चार मुखी दीपक में चार दिशाओं की ओर बातियां रखी जाती हैं. धार्मिक मान्यताओं में चार मुखी दीपक को सुख-समृद्धि, धन-धान्य और खुशहाली की कामना से जोड़कर देखा जाता है। कुछ परंपराओं में इसे भगवान ब्रह्मा और चारों दिशाओं का प्रतीक भी माना जाता है। मान्यता है कि पूजा के दौरान चार मुखी दीपक जलाने से घर में मंगल और सकारात्मकता बनी रहती है।

● पांच मुखी दीपक जलाने से क्या होता है?

पांच मुखी दीपक यानी पंचमुखी दीपक का धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्व बताया गया है। इसमें पांच अलग-अलग दिशाओं में पांच बातियां जलाने की व्यवस्था होती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पांच मुखी दीपक को पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश यानी पंचतत्वों का प्रतीक माना जाता है. कई परंपराओं में पंचमुखी दीपक को भगवान शिव, भगवान हनुमान और अन्य देवी-देवताओं की विशेष पूजा से भी जोड़ा जाता है।

● छह मुखी दीपक का क्या है धार्मिक महत्व?

छह मुखी दीपक में छह बातियां जलाने की व्यवस्था होती है। धार्मिक मान्यताओं में इसे संतान की खुशहाली, परिवार के कल्याण और जीवन में सुख-शांति की कामना से जोड़ा जाता ह। कुछ परंपराओं में छह मुखी दीपक को भगवान कार्तिकेय और उनकी शक्ति से भी संबंधित माना जाता है. श्रद्धालु इस दीपक को जलाकर परिवार की उन्नति और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना करते हैं।

● सात मुखी दीपक क्यों जलाया जाता है?

सात मुखी दीपक में सात बातियां जलती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सात मुखी दीपक को मां लक्ष्मी की कृपा और आर्थिक समृद्धि की कामना से जोड़ा जाता है। इसे जलाकर श्रद्धालु घर में धन-धान्य, सुख-सुविधा और खुशहाली बनाए रखने की प्रार्थना करते हैं।

● आठ मुखी दीपक का क्या महत्व है?

आठ मुखी दीपक में आठ बातियां जलाने की परंपरा है। धार्मिक मान्यताओं में इसे भगवान गणेश और विघ्नों को दूर करने की कामना से जोड़ा जाता है। श्रद्धालु इस दीपक को जलाकर अपने जीवन की बाधाओं को दूर करने और कार्यों में सफलता प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं।

● नौ मुखी दीपक क्यों जलाया जाता है?

नौ मुखी दीपक को विशेष रूप से मां दुर्गा की उपासना और शक्ति की आराधना से जोड़कर देखा जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नौ मुखी दीपक की नौ ज्योतियां मां दुर्गा के नौ स्वरूपों यानी नवदुर्गा का प्रतीक मानी जाती हैं। नवरात्रि के दौरान मां दुर्गा की विशेष पूजा में इस तरह के दीपक का इस्तेमाल किया जाता है। मान्यता है कि नौ मुखी दीपक जलाकर मां भगवती से साहस, शक्ति, सुख-समृद्धि और परिवार की रक्षा की प्रार्थना की जाती है।

■ पं. नित्यानंद

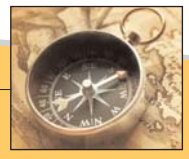
• शुक्र ग्रह...

सफेद पुखराज



सफेद पुखराज जिसका संबंध शुक्र ग्रह से माना जाता है।शुक्र को प्रेम, सुख-संपदा और धन का कारक मानते हैं। ऐसे में सफेद पुखराज को तब पहनने की सलाह दी जाती है जब रिश्ते, आर्थिक स्थिति और सुख-सुविधाओं पर बुरा असर पड़ने लगता है। वहीं इसकी स्थिति को मजबूत करने के लिए भी कई लोग सफेद पुखराज पहनते हैं। सफेद पुखराज को धारण करने से आर्थिक स्थिति में धीरे-धीरे सुधार आने की मान्यता है। इसी के साथ सुख-सुविधाएं भी मिलती है। अगर किसी के रिश्ते में मनमुटाव वाली स्थिति है या फिर पार्टनर के साथ हमेशा अनबन होती रहती है तो भी सफेद पुखराज लाभकारी माना जाता है। शादीशुदा लोगों के लिए ये रत्न काफी शुभ माना जाता है। रत्नशास्त्र मान्यता है कि इस रत्न से कपल्स में आपसी समझ बढ़ने लगती है। साथ ही इस रत्न के चलते कॉन्फिडेंस बढ़ता है और पर्सनैलिटी में भी निखार आता है।

• वास्तु शास्त्र...



वास्तु शास्त्र में घर के बिल्कुल मध्य भाग को ब्रह्म स्थान कहा जाता है। इसे पूरे घर का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। वास्तु के अनुसार, इस स्थान को हमेशा साफ, खुला और व्यवस्थित रखना चाहिए। यहां खाली बर्तन, पुराने डिब्बे, कबाड़ या भारी सामान जमा करने से बचें। मान्यता है कि ब्रह्म स्थान में अनावश्यक चीजें रखने से घर की ऊर्जा का संतुलन बिगड़ सकता है। इसका असर परिवार के सदस्यों की तरक्की और सुख-शांति पर पड़ने की आशंका जताई जाती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित